

SISE & CTE, JABALPUR

ONLINE CLASS SESSION

- Date : 20/04/2020
- Coordinator : Smt. Preeti Shrivastava
- Class : M.Ed. 2nd Sem
- Time : 12 to 12:40 PM
- Subject : Psychology
- Topic : Proprium & Dynamics of personality
by Allport
- TLM Used : Slides & other study materials
- Attendance : 100 %

प्रोप्रियम (Proprium) & कार्यात्मक स्वायत्तता (Functional Autonomy)

प्रोप्रियम (Proprium)

- ◆ प्रोप्रियम मानव प्रकृति के धनात्मक, सर्जनात्मक, वर्धन-उन्मुखी तथा गतिशीलता के गुणों को दर्शाता है।
- ◆ आलपोर्ट ने प्रोप्रियम के स्वरूप एवं विकास का वर्णन सात अवस्थाओं के रूप में किया है। ये सातों अवस्थाएं शैशवावस्था से किशोरावस्था तक की होती हैं।

WWW

प्रोप्रियम (Proprium)

- ◆ किशोरावस्था में आकर प्रोप्रियम का विकास पूर्ण हो जाता है।
 - ◆ अब हम इन सातों अवस्थाओं के बारे में समझेंगे-
1. **शारीरिक आत्मन (Bodily Self):** इस अवस्था में बालक अपने अस्तित्व से अवगत होता है।

प्रोप्रियम (Proprium)

2. **आत्म पहचान (Self-Identity):** इस अवस्था में बच्चे यह अनुभव करते हैं कि उनके भीतर कई तरह के परिवर्तन होने के बावजूद उनकी एक अलग पहचान है।
3. **आत्म सम्मान (Self-Esteem):** बच्चे अपने उपलब्धियों पर गर्व करने लगते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

4.आत्म विस्तार (Self-Extension): बच्चे उन वस्तुओं तथा लोगों को पहचानने लगते हैं जो उनके मतलब का होता है।

प्रोप्रियम (Proprium)

5.आत्म प्रतिमा (Self-Image): बच्चे अपने तथा अपने व्यवहार के बारे में एक वास्तविक एवं आदर्श प्रतिमा विकसित कर लेते हैं और अपने माता-पिता की प्रत्याशाओं को संतुष्ट कर पाने में सफल होते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

6.युक्तिसंगत समायोजन के रूप में आत्मन (Self as Rational Coper): इस अवस्था में बच्चे दिन-प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में तर्क-वितर्क एवं विवेक का प्रयोग करना सीख लेते हैं।

प्रोप्रियम (Proprium)

7. उपयुक्त प्रयास (Propriate Striving): यह अवस्था किशोरावस्था में विकसित होती है तथा इसमें किशोर दीर्घ-कालीन योजना तथा लक्ष्य का निर्माण करना प्रारम्भ कर देते हैं।

गुणधर्म या आत्मतत्त्व
(Proprium)

लैटिन भाषा का शब्द है Propius, जिसका अर्थ होता है अपना (Own)

आलपोर्ट के अनुसार,

- ① व्यक्तित्व असंबंधित शीलगुणों का मात्र एक बंडल नहीं होता है। वरिष्ठ इंसानों शीलगुणों की एक संगति, एकता संव समन्वय पाया जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व में कुछ ऐसे निहित होते हैं जो शीलगुणों, मूल्यों, अभिप्रेतों की संगठित करता है। इसके आलपोर्ट ने 'प्रोपियम' कहा है।
- ② आलपोर्ट के लिए प्रोपियम - आत्मन (Self) या अहं (Ego) के लुब्ध है परन्तु उन्होंने इन दोनों शब्दों का प्रयोग नहीं किया है।
- ③ आलपोर्ट के अनुसार, प्रोपियम व्यक्तित्व के उन पहलुओं से संबंधित होता है जो व्यक्तित्व में आन्तरिक एकता, संगति और समन्वय स्थापित करते हैं।
- ④ आलपोर्ट के अनुसार, अहं (Ego) के जो कार्य हैं, वही कार्य व्यक्तित्व के प्रोपियम के हैं।
- ⑤ आत्म ~~प्रतिमा~~ प्रतिमा (Self image), आत्म लाक्षणिकता (Self Identification), आत्म विस्तार (Self extension), आत्म गौरव (Self pride), तार्किक चिन्तन, शरीर बोध, संज्ञानात्मक शैली (Cognitive style) और शान की प्रक्रिया सभी प्रोपियम से सम्बन्धित हैं।

① आलपोर्ट के अनुसार, Proprium के स्वरूप व विकास की सात अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ शैशवावस्था से किशोरावस्था तक की होती हैं। किशोरावस्था में proprium पूर्ण विकसित हो जाता है।

- प्रथम 3 वर्ष की आयु में विकास
- ① शारीरिक आत्मन (Bodily Self)
 - ② आत्म पहचान (Self Identity)
 - ③ आत्म सम्मान (Self Esteem)

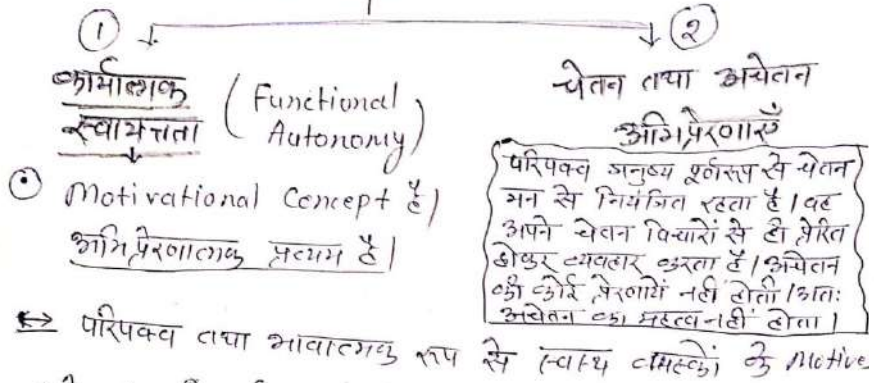
- 4 से 6 वर्ष की आयु में विकास
- ④ आत्म विस्तार (Self extension)
 - ⑤ आत्म प्रतिमा (Self image)

- 6 से 12 वर्ष की आयु में विकास
- ⑥ युक्तिसंगत समागोजन के रूप में आत्मन (Self as a rational copor)

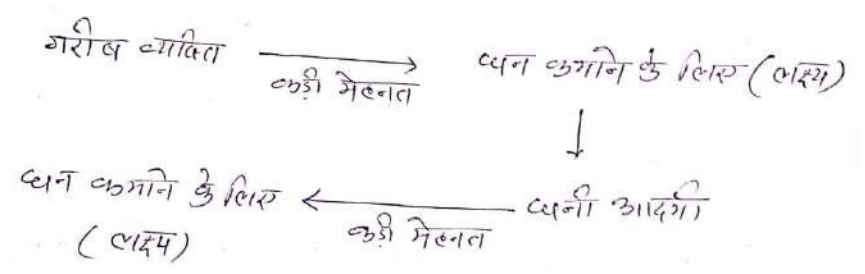
- किशोरावस्था में विकास
- ⑦ उपयुक्त प्रयास (Propriate striving)

8 slides के बाद देखें

2 व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of Personality)



परिपक्व तथा भावात्मक रूप से स्वार्थ चमत्केन के motive (प्रेरक) उनके रूप अनुभवों से कार्यात्मक रूप से जुड़े नहीं होते हैं। आर्थात् किसी भी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति ज्यादा महत्वपूर्ण है, न कि उसकी बीती हुई परिस्थितियाँ



परिपक्व व्यक्ति (धनी आदमी) की कुछ आगिप्रेरणारं (धन कमाना) वात अनुभूतियों (गरीबी) से कार्यात्मक रूप से में प्रत्यक्ष संबंधित नहीं है। फिर भी संबंधित: इन्हीं अनुभूतियों (गरीबी) से आगिप्रेरक (धन कमाने की प्रेरणा, उत्पन्न हुए। लेकिन प्रथम चरण से प्रकृत हुए

आलापों के अनुसार,
आगिप्रेरणारं (धन कमाना) उस व्यक्ति की मौलिक परिस्थिति (गरीबी) से वर्तमान स्थिति में पूर्णतया स्वतंत्र होती है।

पहले व्यक्ति था → धन कमाना (गरीबी मिटाने हेतु)
आज व्यक्ति है → " " (विलासिता हेतु)

आलापों की मानना था कि व्यक्तित्व के सिद्धांत के लिए मुख्य समस्या है कि प्रेरणा के साथ व्यवहार?



प्रेरणा की अवधारणा (चार आवश्यकताएँ)

- 1 व्यक्ति के प्रेरकों की समझालीन पहचान करना।
- 2 व्यक्ति को अंग कर प्रेरकों की अनुभूति करना।
- 3 व्यक्ति के शक्ति के मूल्यों, योजनाओं तथा इरादों को जानना।
- 4 व्यक्ति की आगिप्रेरणा के तरीकों को आद्वितीय (Unique) समझना।

उपरोक्त प्रेरक की अवधारणा से व्यक्ति के व्यवहार को जाना जा सकता है।